ISSN–2278-5655

AMIERJ

AARHAT MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL EDUCATION RESEARCH JOURNAL

Volume–X, Issues– II Jan –Feb 2021

भाषा शिक्षण

Dr. Hetal Barot

HOD Gujarati SNDT College of Arts & SCB College Comm. & Sci.

SNDT Women's University, Churchgate, Mumbai-400020

आज की वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षण व्यवस्था में सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। अध्यापन कार्य भी गतिविधियों के बिना शुष्क एवं नीरस बनता जा रहा है। परिणामस्वरूप गतिविधियों को सर्वलक्ष्यी और जीवन लक्ष्यी बनाने की आवश्यकता है। छात्रों के मन, हृदय और बुद्धि पर गतिविधियों का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। अनेक आयोजनों द्वारा गतिविधियों को शिक्षा पद्धति में लाने का आज सफल प्रयास किया जा रहा हैं। इन गतिविधियों से छात्रों में स्वतंत्रता का भाव पनपता है, जिससे शिक्षा कार्य जीवंत हो पाता है। इस भाव के पैदा होने का मतलब यह नहीं है कि छात्रों को आजादी के माहौल में छोड़ देना चाहिए, ऐसा करने से तो बेलगाम बन सकते हैं। स्वतंत्रता के साथ जवाबदारी के कार्य का भी समन्वय होना चाहिए। शिक्षण को कल्याणकारी और गतिविधियों के उपयोगी बनाने के लिए छात्रों के आसपास के वातावरण में से प्रतिद्वंद्विता के तत्त्वों को दूर करना जरूरी है। स्कूलों में छात्रों की तमाम गतिविधियाँ स्पर्धा के नियमों से नहीं बल्कि सहकार के बलबूते पर होनी चाहिए, तो इसका सार्थक परिणाम मिल सकता है।

cc BY Aarhat Publication & Aarhat Journals is licensed Based on a work at http://www.aarhat.com/amierj/

सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का उद्देश्य : -

सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का शुभ उद्देश्य मानव की आंतरिक वृत्तियों को शुद्ध करना है। सांस्कृतिक गतिविधियों का सही माहौल स्कूल में तैयार करने से छात्रों को ज्यादा फायदा मिल सकता है। शिक्षा व्यवस्था में लोकशाही के सिद्धांतों में एकरूपता होनी चाहिए। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि इन गतिविधियों में स्कूल के सभी छात्र भाग ले सकें। सांस्कृतिक गतिविधियों द्वारा छात्रों के विशेष प्रतिभा को पहचान कर उसे आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करना चाहिए।

ISSN–2278-5655
AMIERJ
Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–X, Issues– II Jan –Feb 2021

भाषा शिक्षा में गतिविधियों का महत्त्व : -

भाषा के अध्यापन में सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को परोक्ष रूप से जोड़कर छात्रों की रुचि और जिज्ञासावृत्ति को सतेज करने का काम भाषाशिक्षक के हाथ में है। पाठ्यक्रम और गतिविधियों का अनुसरण कर भाषाशिक्षक को छात्रों की सृजन शक्ति को बढ़ाने के लिए विशेष अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। किंतु आज सबसे बड़ी समस्या यह आ रही है कि यह गतिविधियाँ कब करनी? इसके लिए मार्गदर्शक कौन बने? इसके लिए कार्यक्रम किस प्रकार से बनाएं? फिर भी हम दूसरी ओर देखें, तो स्कूलों में वृक्तव्य स्पर्धा, नाट्य स्पर्धा, निबंध स्पर्धा, सांस्कृतिक कार्यक्रम पूरे साल चलते रहते हैं। इन गतिविधियों में भाषा शिक्षक भी प्रत्यक्ष रूप से शामिल हो, तो कार्य सरल बन जायेगा और भाषा-ज्ञान के विकास में छात्रों का हितचिंतक भी बन सकता है। सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन सिर्फ समाचार पत्रों में प्रसिद्धि पाने के लिए नहीं होना चाहिए।

किसी भी भाषा के छात्र नाट्य प्रवृत्तियों और कोई अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों में सहोत्साह सहभागी हो, इतना ही नहीं बल्कि वह अपने भावी जीवन में भी इस क्षेत्र में आगे बढ़ें। व्यावहारिक जीवन में भी बच्चों को जब अवसर मिलता है, तभी वे शामिल होते हैं। यहां मेरे कहने का मतलब इतना ही है कि भाषाशिक्षक छात्रों को इन गतिविधियों में शामिल करें और उस पर उनका मार्गदर्शन भी करे।

मैंने कुछ गतिविधियों के स्वरूप को यहाँ बताने का प्रयास किया है, उसमें से जो गतिविधियां शामिल करने योग्य है, उस पर आप विचारणीय हैं -

काव्य सम्मेलन और मुशायरा

भाषा अध्यापन में पद्य सिखाते समय अध्यापक को काव्य सम्मेलन और मुशायरा के बारे में थोड़ा परिचय देना चाहिए। लेकिन सिर्फ इन चीजों की जानकारी मात्र देने से उनमें जिज्ञासा का भाव जागृत नहीं कर सकते है। इसके लिए सबसे पहले स्कूलों में इस तरह के कार्यक्रम रखकर छात्रों की काव्य के प्रति रुचि पैदा की जा सकती है। स्कूलों में अच्छे कवियों को आमंत्रित कर काव्य गोष्ठी का आयोजन करना चाहिए। ताकि छात्रों को काव्य के रसास्वादन का अनुभव भी मिल सकता है। बरखा या वसंत ऋतु के समय इस तरह के कार्यक्रमों को आयोजित कर उनमें रुचि पैदा की जा सकती है। इस प्रकार के कार्यक्रम छात्रों में भाषा-ज्ञान को बढ़ाने में सहायक होते है।

नाट्य मंचन

स्कूलों में नाटक के मंचन द्वारा छात्रों का विकास किया जा सकता है। खासकर शहरों में तो यह विशेष

रूप से उपयोग में आ रही है। सिनेमा और नाट्य मंचन किसी भी भाषा विकास में असरकारक भूमिका निभाते हैं।

परंतु यह दृश्य-श्रव्य कौशल्य की यह कला आज उल्टी दिशा में जा रही है, उसका मुझे दु:ख हो रहा है। अभी स्कूलों में सिर्फ पैसा इकट्ठा करने के लिए नाटक करते है। यह हकीकत बन चुकी है।

इसके द्वारा छात्रों को बोलने की हिम्मत मिलती है। शुद्ध उच्चारण तथा शब्द सम्पदा के लिए वह जागृत रहता हैं। फलस्वरूप क्लास की शिक्षा में यह उपकारक साबित होता है। इस प्रवृत्ति के लिए छात्रों को अलग-अलग समिति बनाकर बांट देना चाहिए। जैसे संगीत समिति, टिकिट समिति, जहिरात समिति, आयोजन समिति, स्टेज समिति, दिग्दर्शन समिति, वेशभूषा समिति द्वारा छात्रों में नेतृत्व, अभिनय, शक्ति, हिम्मत, सामंजस्य जैसे जीवन के व्यावहारिक गुण भी विकसित कर सकते है। जो छात्र इस नाट्य मंचन में भाग नहीं ले सकते है, तो भी उनमें दृश्य-श्रव्य कौशल्य विकसित कर सकते हैं। परंतु इसमें भी मार्गदर्शक के रूप में अध्यापक का होना जरूरी रहता है। छात्रों का संवाद और शुद्ध उच्चारण सुनने में और बोलने में नाट्य मंचन असरकारक साबित हो सकती है।

वर्गीय वाक् स्पर्धाएँ

छात्रों को अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर बहुत ही कम मिलता है। यह फरियाद सभी जगह पर देखने को मिलती है। वर्ग की शिक्षा में थोड़े छात्र ही अपना संकोच भूलकर प्रश्न पूछते हैं इतना ही क्या भाषा अध्यापन के लिए संतुष्टि का विषय है? छात्र दलील के साथ तर्क जोड़कर संवाद कर सके ऐसी व्यवस्था वाक् स्पर्धा के द्वारा ही हो सकती है।

स्कूलों में इसके ऊपर भी अलग से क्लास रखनी चाहिए। कोई नियत विषय के ऊपर अपने खुद के विचार (मौलिक विचार) व्यक्त कर सके इसलिए भाषा शिक्षक को जागृत रहना चाहिए।छात्र कभी भी किसी भी प्रसंग के ऊपर बोल सके और उनके भाषण कला में प्रवाह हो। योग्य शब्दों का चयन कर सके। भाषा कौशल्य बढ़ाने में वाक् स्पर्धा बहुत ही जरूरी है। अगर इस बारे में हमने लापरवाही बरती, तो जीवन व्यवहार में अच्छे वक्ताओं की जरूरत पूरी नहीं हो सकेगी। उस बात को न्याय नहीं मिलेंगा। इसलिए वर्ग में पाठ्यपुस्तक का वाचन अच्छे गद्य खंडों से करना चाहिए। अच्छे वक्ताओं को वक्तव्य के लिए आमंत्रित कर छात्रों को भी उसमें शामिल करना चाहिए। अच्छे वक्ताओं के वक्तव्य को टेप रिकॉर्डर द्वारा भी सुनवाया जा सकता है। यह गतिविधि भाषा विकास में सबसे महत्त्वपूर्ण साबित हो सकती है।

सांस्कृतिक त्यौहार

हर भाषा क्षेत्र के, इलाके के अपने त्यौहार, लोक नृत्य, अभिनय गीत होते है। इन्हें पाठ्यक्रम में शामिल कर छात्रों की रुचि को बढा सकते हैं। जैसाकि किसी त्यौहार के परिप्रेक्ष्य में पढ़ाते हुए, उस प्रसंग के अनुरूप भाषा, शब्दों का चयन, सबकी जानकारी और मार्गदर्शन शिक्षक और पाठ्यक्रम के बिना सम्भव नहीं है। जब वर्ग में आप छात्रों के साथ त्यौहार मनाते हैं, तो उनकी भी इसमें रुचि पैदा होती है। पोशाक, खानपान और अन्य चीजों के नाम भी जान सकते हैं। यह दूसरी भाषा सिखाने में काम आती है। नृत्यों द्वारा लोकसाहित्य छात्रों तक पहुंचता है।

साहित्य और भाषा शिक्षण

साहित्य का जन्म भाषा के बाद हुआ है और अगर भाषा भक्ति धारा है, तो साहित्य उसके मूल तक पहुंचने का मार्ग। भाषा में आए बदलाव हम साहित्य के माध्यम से ही जान पाते हैं। उच्चारण से लेकर वाक्य और शब्दों के अर्थ की प्राप्ति साहित्य द्वारा आसानी से समझ सकते हैं। कोई पुरानी भाषा जो बोलचाल में कम है, पर सीखनी है तो साहित्य के द्वारा सीख सकते हैं। जैसे - लेटिन और संस्कृत अभी बोलचाल में नहीं है, लेकिन उसको साहित्य द्वारा सीख सकते है। भाषा जीवन है, तो साहित्य उसकी उम्र के पड़ाव के फोटो कह सकते हैं। साहित्य शुरुआत से आखिर तक ऐसा चुनना चाहिए, जिससे उनके शिक्षण के स्तर आधारित हो सके। साहित्य प्राथमिक से लेकर माध्यमिक या इससे ऊपरी स्तर का हो।

साहित्य का स्तर :

कृति का चयन ऐसा होना चाहिए कि जिससे शिक्षण का स्तर भी संभल जाए और भाषा का ज्ञान भी बढ़ सके। जैसे हमारे माध्यमिक स्तर पर में जननी काव्य रखा है। प्राथमिक स्तर पर प्रार्थना और उच्च माध्यमिक पर 'माधवाव अखाना छप्पा'। यह स्तर छात्रों की काबिलियत के अनुसार रखा गया है। भाषा का स्तर, साहित्य का चयन भाषा शिक्षण में सबसे जरूरी माना जाता है। उच्चारण प्रक्रिया में पद का उपयोग जरूरी है। जैसे मणिपुरी छात्रों के 'द', 'ड' उच्चारण में समस्या आती, तब हम वैसे ही बालगीत प्राथमिक स्तर पर चुन के रखते हैं। 'दादा नो डंगोरो लीधो', अंगों के परिचय के लिए 'नानू मारू नाक' जैसे अभिनय गीत रखे हैं।

माध्यमिक स्तर पर साहित्य से भाषा में आने वाले इढ़िप्रयोगों और कहावतों का अर्थ संदर्भ से समझ सकते हैं। आखिर में इतना ही कहूंगा कि चुना हुआ साहित्य समाज और छात्रों की जीवन राह में प्रकाश फैलाए और सही राह दिखायें ऐसा ही हो तो अच्छा है। जैसे वैष्णव जननां लक्षणों काव्य द्वारा हम छात्रों

ISSN-2278-5655
AMIERJ
AARHAT MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL EDUCATION RESEARCH JOURNAL
Volume–X, Issues– II Jan –Feb 2021

को भाषा सिखाने के साथ ज्ञान और आदर्श भी सिखाते हैं।

जैसे भाषा बदलती रहती है वैसे साहित्य भी बदलता रहेगा। शिक्षकों को साहित्य के साथ अपनी सोच और कार्यप्रणाली को भी समय के साथ बदलना पड़ेगा। मुझे आशा है कि भाषा का शिक्षण साहित्य और गतिविधियों के साथ उन्नति के शिखर पर आगे बढ़ेंगा।

संदर्भ

गुजराती भाषानु अध्यापन :(रंजीत भाई देसाई, मगनलाल नायक, बकुलभाई रावल)

भाषा शिक्षण :(रवींद्रनाथ श्रीवास्तव)